Toppersnotes®
Unleash the topper in you

राजस्थान

प्रयोगशाला सहायक (भूगोल)

राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)

भाग - 3

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	मानव भूगोल	1
2.	विश्व की प्रमुख जनजातियाँ	9
3.	भारत की जनजातियाँ	15
4.	विश्व में जनसंख्या वृद्धि	19
5.	जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त	36
6.	प्रवास	39
7.	मानव विकास संकल्पना	49
8.	ग्राम्य आकारिकी	52
9.	ग्रामीण समस्याएं एवं नियोजन	55
10.	ग्रामीण अधिवासों के प्रकार	59
11.	नगरीय आकारिकी	64
12.	मलिन बस्तियाँ	69
13.	मानव की आर्थिक गतिविधियाँ	70
14.	विश्व के प्रमखु परिवहन मार्ग	74
15.	अंतर्राष्ट्रीय व्यापर और व्यापारिक संगठन	89
16.	संचार उपग्रह	95
17.	वायु प्रदूषण	104
18.	जल प्रदूषण	110
19.	ध्वनि प्रदूषण	113
20.	रेडियोधर्मी प्रदूषण	114
21.	तापीय प्रदूषण	116
22.	ई अपशिष्ट प्रदूषण	117
23.	जलवायु परिवर्तन	118
24.	संसाधनों का वर्गीकरण - 1	125
25.	संसाधनों का वर्गीकरण – 2	129

26.	खनिज संसाधन	**131**
27.	उर्जा संसाधन	**140**
28.	कृषि के प्रकार	**151**
29.	प्रमुख फसले	**155**
30.	भारत में औद्योगिक विकास	**163**
31.	पोषणीय विकास-परम्परागत एवं आधुनिक दृष्टिकोण	**177**
32.	ग्रामीण विकास- कुटीर उद्योग एवं डेयरी उद्योग	**187**
33.	सूती वस्त्र उद्योग	**197**
34.	प्राकृतिक संसाधन	**202**
35.	खनिज	**219**
36.	इंदिरा गांधी नहर परियोजना	**222**
37.	मानचित्रों के प्रकार एवं उनकी व्याख्या	**226**
38.	आंकड़ों का संग्रहण (प्रश्नावली एवं अनुसूची)	**237**
39.	आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या	**240**
40.	भौगोलिक सूचना तंत्र	**242**

1 CHAPTER

मानव भूगोल

- मानव भूगोल, भूगोल की एक महत्वपूर्ण शाखा है।
- भूगोल एक विशिष्ट विज्ञान है जो पृथ्वी के परिवर्तनशील स्वरूप का क्रमबद्ध अध्ययन करता है। क्योंकि यहाँ मानव का निवास है, इस कारण भौगोलिक विवेचन में पृथ्वी के भूतल का अध्ययन मानव ग्रह के रूप में किया जाता है।
- 19वीं शताब्दी से पूर्व भूगोल की कोई शाखा नहीं थी। प्राकृतिक तथ्यों और मानवीय तथ्यों दोनों का अध्ययन सामान्य भूगोल में किया जाता था। लेकिन 19वीं शताब्दी के मध्य (1859) में प्रसिद्ध जीव विज्ञानी डार्विन की पुस्तक *The Origin of Species* प्रकाशित हुई, जिससे वैज्ञानिक अध्ययनों में नवीन क्रांति का सूत्रपात हुआ।
- इस पुस्तक में डार्विन ने बताया कि जीव अपने को पर्यावरण के अनुकूल बनाकर जीवित रहते हैं और संतान उत्पन्न करते हैं। जो जीव पर्यावरण के अनुकूल नहीं होते, वे थोड़े समय बाद नष्ट हो जाते हैं। केवल सक्षम जीव ही जीवित रहते हैं और अपनी जाति का विकास करते हैं। इसे प्राकृतिक चयन कहा जाता है।
- इस विचारधारा का प्रभाव भूगोल पर भी पड़ा। भूगोलवेता रेटजेल ने भूगोल के मानवीय पक्षों के अध्ययन पर विशेष बल दिया। रेटजेल ने मानव और पर्यावरण के संबंधों के अध्ययन को महत्वपूर्ण मानते हुए भूगोल की प्रमुख शाखा के रूप में मानव भूगोल की आधारशिला रखी।
- रेटजेल:
- मानव भूगोल के जन्मदाता।

<u>मानव भूगोल की परिभाषाएँ:</u>

- रेटजेल: मानव भूगोल के दृश्य सर्वत्र पर्यावरण से संबंधित होते हैं, जो भौतिक दशाओं का योग होता है।
- सेम्पुल: मानव भूगोल क्रियाशील मानव और गतिशील पृथ्वी के मध्य अंतर्संबंधों का अध्ययन है।
- ब्लांश: मानव भूगोल पृथ्वी और मनुष्य के बीच पारस्परिक संबंधों का अध्ययन है।
- हटिंग्टन: "मानव भूगोल, भौगोलिक पर्यावरण और मानवीय क्रियाओं तथा गुणों के पारस्परिक संबंधों की प्रकृति और वितरण का अध्ययन है।"
- डिकेन और पिट्स: "मानव भूगोल को मनुष्य और उसके कार्यों के अध्ययन के रूप में देखा जाता है।"
- आर. एम. सिंह: "मानव भूगोल, भूगोल की एक प्रमुख शाखा है जिसमें मानव और पर्यावरण के मध्य संबंधों का अध्ययन किया जाता है।"
- कैमिले वेलो: "मानव भूगोल वह विज्ञान है जो व्यापक अर्थ में प्राकृतिक पर्यावरण के साथ समूहों के अनुकूलन का अध्ययन करता है।"
- ब्रूंशः- मानव भूगोल उन समस्त तथ्यों का समूह है जिसमें मानवीय क्रियाऐं कार्य करती है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

मानव भूगोल का इतिहास

- भूगोल का स्वतंत्र विषय के रूप में विकास ग्रीक भूगोलवेताओं के कार्यों से प्रारंभ हुआ।
- हेगेट: भूगोल को पृथ्वी और मानव दोनों का अध्ययन माना।
- स्ट्रेबो: भूगोल को बसे हुए विश्व का वितरण बताया।
- आधुनिक भूगोल का विकास 17वीं शताब्दी में हुआ।
- 18वीं सदी में भौतिक प्रदेशों के उद्भव और वितरण का अध्ययन होने लगा।
- 19वीं सदी में राष्ट्रीय गणना, व्यापारिक सांख्यिकी और नृजातीय अध्ययनों ने भूगोल में स्थान प्राप्त किया।
- 19वीं शताब्दी के अंत तक यूरोप सहित विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों में भूगोल का स्वतंत्र विषय के रूप में अध्ययन किया जाने लगा।

प्रारंभिक विभाजन:

- प्रारंभ में भूगोल का दो शाखाओं में विभाजन हुआ:

1. मानव भूगोल
2. भौतिक भूगोल

मानव भूगोल

- पृथ्वी पर मूलतः दो प्रकार के वातावरण पाये जाते हैं:

1. प्राकृतिक वातावरण
2. सांस्कृतिक वातावरण

- ध्रुवीय प्रदेशों में रहने वाले शीत वातावरण के प्रति समायोजित।
- मध्य अक्षांशों में रहने वाले (शेरपा, गिज) शीतोष्ण वातावरण के प्रति समायोजित।
- विषुवत रेखीय क्षेत्रों में रहने वाले (पिग्मी) उष्ण वातावरण के प्रति समायोजन कर जीना सीखते हैं।
- 19वीं सदी से पूर्व एक विशिष्ट विज्ञान था जिसमें भूतल के परिवर्तनशील स्वरूप का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता था। इसे सामान्य भूगोल कहते थे।
- 19वीं सदी के उत्तरार्ध में (1859), प्रसिद्ध जीव विज्ञानी चार्ल्स डार्विन की पुस्तक The Origin of Species प्रकाशित हुई।

प्राकृतिक चयन:

- डार्विन के अनुसार, केवल वही जीव पर्यावरण के अनुकूल रह पाए जो अनुकूलन में सक्षम थे। शेष प्रजातियां विलुप्त हो गईं। इसे प्राकृतिक चयन कहा गया।

डिरिक रेटजेल:

- मानवीय पक्षों पर अधिक जोर दिया।
- मानव भूगोल की नींव रखी।
- मानव और वातावरण के संबंधों पर बल दिया।
- मानव भूगोल के जनक।
- रेटजेल की प्रसिद्ध पुस्तक: Anthropogeography
- प्रमुख देशों के भूगोलवेता:
  - ✓ **फ्रांस (French):** विडाल-डी-ला-ब्लांश, जीन ब्रुंश, अल्बर्ट डिमांजिया।
  - ✓ **जर्मनी (German):** रेटजेल, हम्बोल्ट, रिटर।
  - ✓ **ब्रिटेन (British):** मैकिंडर, जे. फ्लोयर।
  - ✓ **अमेरिका (American):** सेम्पुल, हटिंग्टन, ईसा बोमेन, जी. टेलर, कार्ल सावर।

मानव भूगोल और मानव पारिस्थितिकी:

- बैरोज (1922): शिकागो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर थे।
- बैरोज ने मानव के भौतिक पर्यावरण के साथ समायोजन पर प्रकाश डालते हुए भूगोल की प्रकृति में नियत मानव पक्ष को अपनाया।
- 1972 के स्टॉकहोम में हुए प्रथम विश्व पर्यावरण सम्मेलन में "मानव पारिस्थितिकी" शब्द का प्रयोग बढ़ा।
- लेमार्क के कार्यों से पुष्टि हुई कि प्रत्येक जीव सचेतन रूप में अपने परिवेश में समायोजन कर सकता है।

भूगोलवेता और उनके योगदान: मानव भूगोल मानव पारिस्थितिकी है।

- रेटजेल: राज्य संबंधी जैविक संकल्पना।
- डेविस: भू-आकृति विज्ञान।
- सेम्पुल, हटिंग्टन, टेलर: पर्यावरणीय निश्चयवाद।
- हरबर्टसन: प्रादेशिक भूगोल।

मानववादी भूगोल

- मानववादी भूगोल का विकास मात्रात्मक क्रांति (भूगोल) तथा प्रत्यक्षवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप हुआ।
- 1960 के दशक के अंत में इसका प्रारंभ हुआ।
- मानव भूगोल ने मनुष्य को केवल "आर्थिक मानव" नहीं माना, बल्कि भूगोल को उपयोगितावादी विज्ञान न मानकर मानव हित का विज्ञान माना। इसमें मानव की सक्रिय और केन्द्रीय भूमिका है। मानववादी भूगोल ने मानव अभिकर्ता और मानव क्रियाशीलता को महत्व दिया।
- मानववादी भूगोल का विकास काण्ट के भौगोलिक दर्शन से स्पष्ट होने लगा।

भूगोल में द्वैतवाद

- यूनानी विद्वानों ने सर्वप्रथम भूगोल की नींव डाली।
- द्वैतवाद का वास्तविक विकास 17वीं शताब्दी के आरंभ में हुआ, जब वारेनियस (1622-1650) ने अपनी पुस्तक सामान्य भूगोल में भौतिक भूगोल और मानव भूगोल के बीच अंतर स्पष्ट किया।
- हैकेटियस: भौतिक भूगोल पर बल दिया।
- हेरोडोटस और स्ट्रेबो: मानवीय पक्ष पर बल दिया।
- हम्बोल्ट: भौतिक भूगोल पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि प्रकृति में एकरूपता पाई जाती है और मानव पर प्राकृतिक शक्तियों का प्रभाव पड़ता है।
- हम्बोल्ट ने क्रमबद्ध भूगोल पर जोर दिया।
- कार्ल रिटर: मानव भूगोल पर ध्यान केंद्रित करते हुए मानव दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने प्रादेशिक अध्ययन पर बल दिया।
- रेक्लस (फ्रांसीसी भूगोलवेता): व्यवस्थित और क्रमबद्ध भूगोल पर बल दिया। उनकी पुस्तक ला टेरे प्रसिद्ध है।
- सोमरविले: 1848 में भौतिक भूगोल पर प्रथम पुस्तक प्रकाशित की।
- 20वीं शताब्दी की शुरुआत में फ्रांसीसी भूगोलवेता ब्लांश, ब्रूंश, और डिमाजिया ने मानव भूगोल के विषय क्षेत्र को विकसित किया।

भूगोल के द्वैतवाद की प्रकृति

- 19वीं सदी से वर्तमान युग तक भूगोल में व्यापक विकास हुआ, जिसके परिणामस्वरूप विषय की अनेक विशेषताएँ बनीं। इन्हें द्वैतवाद की प्रकृति के रूप में जाना जाता है:
    1. भौतिक भूगोल और मानव भूगोल
    2. प्रादेशिक भूगोल और व्यवस्थित भूगोल
- भौतिक भूगोल और मानव भूगोल का विभाजन संभवतः यूनानी भौगोलिक काल से प्रारंभ हुआ, लेकिन वास्तविक विभाजन वारेनियस की पुस्तक ज्योग्राफिया जनरेलिस के उपरांत हुआ।
- काण्ट: भौतिक भूगोल पर बल दिया। उनके अनुसार, भूगोल पृथ्वी की सतह का अध्ययन है। काण्ट जर्मनी के कैनिंग विश्वविद्यालय में दार्शनिक भूगोलशास्त्री थे।

मानव भूगोल के समर्थक

- प्रमुख समर्थक: ब्लांश, लाफेब्रे, कार्ल सावर, हॉर्टशॉर्न, क्रिक, तुवान, एनी बुटीमर।

आदर्शवादी विचारक गुल्के:

- "हमने मानव के मस्तिष्क में प्रवेश करने की पद्धति विकसित कर ली है।"
- एनी बुटीमर:
    - ✓ पुस्तक: Society and Milieu in the French Geographic Tradition (1971)
    - ✓ Values in Geography (1974) (भूगोल में मूल्य)
    - ✓ मानववादी भूगोल में मूल्य आधारित शोध को महत्वपूर्ण माना।
- तुवान:
    - ✓ मानव भूगोल के वास्तविक प्रतिपादक।
    - ✓ काशन: Geography: Phenomenology and the Study of Human Nature (1971)
    - ✓ स्तक: Space and Place

मानव भूगोल में स्थानिक वितरण:

- स्थानिक वितरण को महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके तीन मुख्य पक्ष हैं:
    1. घनत्व
    2. वितरण
    3. प्रतिरूप
- जब किसी क्षेत्र में स्वरूप और विशिष्ट लक्षणों की समरूपता होती है, तब उसे प्रदेश कहा जाता है।
- उदाहरण: गंगा का मैदान।

भौतिक भूगोल और मानव भूगोल में द्वैतवाद

प्राचीन काल:

- हैकेटियस और पोसीडोनियन: भौतिक भूगोल के अध्ययन पर बल दिया।
- हेरोडोटस और स्ट्रेबो: मानव भूगोल को महत्व दिया।
- भौतिक भूगोल का विकास ईसा से 100 वर्ष पूर्व ही हो गया था। इस दृष्टि से यूनानी भूगोलवेता पोसीडोनियन को प्रथम भूगोलवेता माना जाता है।

मध्यकाल:

- 18वीं और 19वीं शताब्दी तक भौतिक भूगोल को जर्मनी में सामान्य भूगोल के रूप में माना जाता रहा।
- सर्वप्रथम पेशेल ने भू-आकृति विज्ञान के अध्ययन को स्पष्ट किया।
- वारेनियस, कांट, और हम्बोल्ट ने क्रमबद्ध भूगोल का समर्थन किया।
- हम्बोल्ट प्रकृति की एकता में विश्वास करते थे।
- रिटर ने मानव-केन्द्रित भूगोल के अध्ययन पर बल दिया।
- मानव भूगोल का विकास भौतिक भूगोल के बाद हुआ।

प्रारंभिक योगदान:

- मध्यकालीन समय में प्लानो कार्पिनी और मार्को पोलो ने एशिया और चीन के सांस्कृतिक परिवेश का वितरण प्रस्तुत किया, जिसमें मानवीय कार्यों की विवेचना की गई।
- विलियम रूबरेक ने "काकेशस और बाल्कन पर्वतों का प्राकृतिक और सांस्कृतिक विवेचन" नामक पुस्तक लिखी।
- अरब भूगोलवेताओं ने मानवीय दृष्टिकोण पर अधिक प्रकाश नहीं डाला।
- जे. फॉर्स्टर ने भूगोल के छह वर्गों में मानव को स्थान दिया:

1. पृथ्वी और भूमि
2. महासागर और जल
3. वायुमंडल
4. पृथ्वी के परिवर्तन
5. जीवधारी
6. मानव

19वीं शताब्दी में मानव भूगोल का विकास:

- प्रमुख भूगोलवेता: हम्बोल्ट, रिटर, रेटजेल, रिचथोफेन, पेशेल।
- हम्बोल्ट ने मानव को सामान्य भूगोल का अंग माना। उनकी पुस्तक: Cosmos।
- उन्होंने मानवीय अनुक्रिया की व्याख्या की।
- रिटर: हम्बोल्ट के समकालीन थे।
- अर्द्र कुंडे: पुस्तक लिखी और प्रादेशिक अध्ययन में मानवीय क्रियाकलापों के संदर्भ पर जोर दिया।
- रेटजेल:
- मानव भूगोल को व्यवस्थित क्रम में संगठित करने का कार्य किया।
- उन्होंने भूगोल को प्रादेशिक दृष्टिकोण से हटाकर व्यवस्थित विधि से मानव का अध्ययन किया।
- पर्यावरणीय निश्चयवाद का प्रतिपादन किया।

रेटजेल की प्रमुख रचनाएँ:

1. Anthropogeography (1891): इसमें मानव अधिवास, प्रवास, और सांस्कृतिक लक्षणों का वितरण प्रस्तुत किया गया।
2. राजनीतिक भूगोल।

- मानव भूगोल के विकास में फ्रांसीसी भूगोलवेताओं का महत्वपूर्ण योगदान है।
- ब्लांश ने मानव-केंद्रित विचारधारा को अपनाया।
- डिमांजिया मानव भूगोल में दार्शनिकता का समावेश किया।

अन्य प्रमुख भूगोलवेता:

- हटिंग्टन, फ्यूलर, लीप्ले, गिड्डिज: मानवीय पक्ष पर बल दिया।
- वुलरिज और ईस्ट: अपनी पुस्तक Spirit and Purpose of Geography में स्पष्ट किया कि भूगोल की नींव भौतिक भूगोल पर आधारित है।

भौतिक और मानव भूगोल का अंतर्संबंध:

- प्राकृतिक और मानव भूगोल में अंतर स्पष्ट करना हमेशा आसान नहीं है।
- वुलरीज ने बताया कि भूगोल को पक्षों में विभाजित करना जटिल है।
- वर्तमान में भूगोल एक ऐसा विषय है जो भौतिक और मानव भूगोल के बीच की कड़ी को जोड़ता है।
- पीटर हैगेट ने भूगोल को एक नवीन स्वरूप में प्रस्तुत किया, इसे "विश्वव्यापी संश्लेषण" के रूप में देखा।

अन्य विचार:

- हरबर्टसन:
  - ✓ भूगोल विषय में भौतिक और मानव भूगोल को अलग करना उचित नहीं है।
  - ✓ मानव को उसके पर्यावरण से पृथक करना संभव नहीं है।

मानव भूगोल के उपागम:

1. ऐतिहासिक उपागम
2. स्थानिक विश्लेषण उपागम
3. परिमाणात्मक उपागम
4. आचार परख उपागम: इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग विलियम किर्क ने किया।
5. कल्याण परख उपागम: 1960 में विकास हुआ।

मुख्य बिंदु:

- "किसको क्या मिलता है, कहाँ और कैसे?"
- विकास: डेविड स्मिथ।

मानव भूगोल का विषय क्षेत्र:

- मानव भूगोल का स्वतंत्र विषय के रूप में विकास 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में हुआ।
- 19वीं शताब्दी में रेटजेल ने भूगोल में मानवीय पक्ष को अलग कर मानव भूगोल को जन्म दिया।
- उनकी पुस्तक Anthropogeography प्रकाशित हुई।
- इसी प्रकार, पेशेल के लेखों से भू-आकृति विज्ञान का जन्म हुआ।

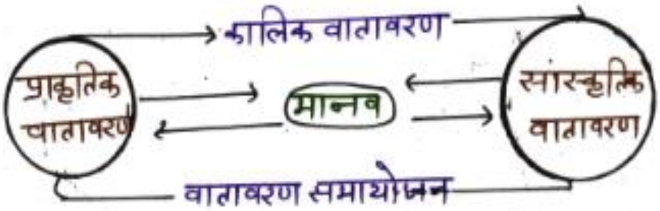

मानव भूगोल के तत्व:

1. जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन।
2. प्राकृतिक वातावरण में उपलब्ध संसाधनों का अध्ययन।
3. सांस्कृतिक भू-दृश्यों का अध्ययन।
4. मानव द्वारा वातावरण के समायोजन का अध्ययन।
5. किसी प्रदेश के स्थानिक संगठन का अध्ययन।
6. निवास करने वाले मानव समूहों का अध्ययन।
7. कालिक अनुक्रमण का अध्ययन।

कृषि का भौगोलिक वितरण:

- पर्वतीय और पठारी क्षेत्रों में: सीढ़ीदार खेती।
- घास युक्त मैदानों में: कृषि यंत्रों द्वारा खेती।
- मानसूनी जलवायु वाले क्षेत्रों (नदियों द्वारा निर्मित मैदान): गहन कृषि।

भूमि का विनाशकारी उपयोग:

- जीन ब्रूंश: इसे "लूटेरी अर्थव्यवस्था" या आर्थिक लूट कहा।
- इसमें खनन कार्य प्रमुख है।

प्रमुख ग्रंथ:

- काष्ट महोदय ने कहा कि भूगोल व इतिहास दोनों वर्णात्मक होते है
- फिच और ट्रिवार्था की पुस्तक: Elements of Geography।
- जीन ब्रूंश और हटिंग्टन द्वारा मानव भूगोल के तथ्यों का विभाजन सर्वाधिक मान्य है।
- भौगोलिक सूचना तंत्र (G.P.S)
- विश्वस्थितिगत तंत्र (G.P.S)

मानव भूगोल के प्रमुख सिद्धांत और भूगोलवेता:

- रेटजेल: आधुनिक मानव भूगोल के जनक।
- उन्होंने पार्थिव एकता और मनुष्य के क्रियाकलापों पर वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया।
- उनके शिष्य सेम्पुल नियतिवाद के कट्टर समर्थक थे।
- ब्लांश: फ्रांस में संभववाद की नींव रखी।
- "मानव भूगोल पृथ्वी और मानव के बीच पारस्परिक संबंधों का अध्ययन है।"
- डिकेन और पिट्स: "मानव भूगोल में मानव और उसके कार्यों को समाहित किया।"
- जीन ब्रुंश: "भूगोल का केंद्र बिंदु स्थान है। जैसे अर्थशास्त्र का संबंध कीमतों से है और भू-गर्भ विज्ञान का संबंध चट्टानों से है, वैसे ही भूगोल स्थान का अध्ययन करता है।"
- हटिंग्टन: मानव भूगोल को दो अध्ययन क्षेत्रों में विभाजित किया:
  1. भौतिक दशाएँ
  2. मानवीय अनुक्रिया

प्राचीन भूगोलवेता:

- **थेल्स और एनैक्सिमेंडर**: जलवायु, वनस्पति, और मानव समाजों का वर्णन किया।
- **अरस्तु**:
  - ✓ ठंडे प्रदेशों के लोग बहादुर लेकिन चिंतन में कमजोर।
  - ✓ एशिया के लोग सुस्त लेकिन चिंतनशील।
- **हेरोडोटस**: खानाबदोश जातियों और स्थायी कृषक जातियों पर वातावरण के प्रभाव का उल्लेख किया।
- **हिकेटियस**: विश्व के भौगोलिक ज्ञान को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया। उन्हें "भूगोल का जनक" कहा जाता है।
- **स्ट्रेबो**: मानव की प्रगति पर भू-पारिस्थितिकीय स्वरूपों के प्रभाव को स्पष्ट किया।
- **मध्यकालीन भूगोल:** इस काल में नौचालन और अन्वेषणों के कारण देशों और लोगों के बारे में मिथक और रहस्य खुलने लगे।

आधुनिक भूगोल:

- जर्मन भूगोलवेता हम्बोल्ट, रिटर, फ्रोबेल, पेशेल, रिचथोफेन और रेटजेल ने इसकी नींव रखी।
- फ्रांस में मानव भूगोल का सर्वाधिक विकास हुआ।
- अमेरिका: सेम्पुल, हटिंग्टन, बौमेन, कार्ल सावर, टेलर।
- ब्रिटेन: हरबर्टसन, मैकिंडर, रॉक्सबी, फ्लोयर।
- 20वीं सदी में मानव भूगोल का विकास सभी देशों में हुआ।

Unleash the topper in you

भूगोल के प्रमुख विचार:

- **नियतिवाद:** प्रकृति को प्राथमिक माना।
- **संभववाद:** मानव को प्राथमिक माना।
- **नव-नियतिवाद (21वीं सदी):** नियतिवाद और संभववाद का सम्मिलित दृष्टिकोण।
- इसे "रुको और जाओ" सिद्धांत कहा गया।
- समर्थक: **टेलर**।

अन्य प्रमुख घटनाएँ:

- 1930 के दशक में मानव भूगोल का विभाजन सांस्कृतिक और आर्थिक भूगोल के रूप में हुआ।
- 1970 के बाद मानव भूगोल में दार्शनिक विचारधाराओं का प्रभाव बढ़ा।

मानव भूगोल का ऐतिहासिक वर्गीकरण:

1. प्राचीन काल
2. मध्यकाल
3. आधुनिक काल

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER विश्व की प्रमुख जनजातियाँ

विश्व की प्रमुख जनजातियाँ

जनजातियों की विशेषताएँ:

- जनजातियों में उन लोगों या समुदायों को शामिल किया जाता है, जो आधुनिक समाज से दूर रहते हुए अपनी परंपराओं, व्यवहारों, और जीवनशैली को सुरक्षित रखने का प्रयास करते हैं।
- ये छोटे-छोटे समूहों में निवास करती हैं।
- इनका मुख्य कार्य आखेट करना, मछली पकड़ना, भोजन संग्रह करना, पशुपालन आदि है।
- आदिम प्रकार से जीवन व्यतीत करने के कारण ही इन्हें जनजाति कहा जाता है।

विश्व की प्रमुख जनजातियाँ और उनके क्षेत्र

भूमध्य रेखीय वन क्षेत्र

- कांगो बेसिन-पिग्मी
- आमेजन बेसिन - बोरो
- मलाया - सेमांग, सकाई

उष्ण मरुस्थलीय

- अरब -बदद्
- कालाहारी-बुशमैन

मानसूनी वन व पर्वतीय प्रदेश

- भारत -नागा, गोंड,संथाल,भील, गुर्जर, टोडा, चकमा, भोटिया
- अमेरिका - रेड इण्डियन

बास के मैदान

- स्टेपी क्षेत्र - खिरगीज
- सवाना -मसाई

शीत मरुस्थल व टुण्ड्रा प्रदेश

- ग्रीनलैण्ड व उत्तरी कनाडा एस्किमो
- उत्तरी यूरोप - लैप्स
- उत्तरी साइबेरिया
- याकूत, यूकाधिर, चूकची, समोयद

1. **कांगो बेसिन:**
   - जनजाति: पिग्मी
   - निवास: 5° उत्तरी अक्षांश से 5° दक्षिणी अक्षांश के बीच।
   - मुख्यक्षेत्र: इतुरी नदी।
   - उपवर्ग:
     1. मबूती
     2. त्वा
     3. बिंगा
     4. गसेशा
   - इन्हें "मूक व्यापार करने वाली जनजाति" भी कहा जाता है।

2. **अमेजन बेसिन**:

- जनजाति: बोरो

3. **मलाया**:

- जनजाति: सेमांग
- निवास: मलाया और दक्षिणी थाईलैंड के पर्वतीय भाग।
- जनजाति: सकाई
- इन्हें "सनोई" नाम से भी जाना जाता है।
- निवास: मलाया के वन क्षेत्र।

उष्ण मरुस्थलीय क्षेत्र:

1. **अरब प्रायद्वीप**:

- जनजाति:
  - ✓ बद्दू
  - ✓ घुमंतू और चलवासी पशुपालक।
  - ✓ मुख्य व्यवसाय: ऊँट पालन।
  - ✓ प्रमुख समूह: रुवाला।
  - ✓ समाज: पितृप्रधान।
  - ✓ मुखिया: "शेख" कहलाता है।

2. **कालाहारी मरुस्थल**:

- जनजाति:
  - ✓ बुशमैन इन्हें "सान" नाम से भी जाना जाता है।

मानसूनी वन और पर्वतीय क्षेत्र:

1. **भारत**:

- जनजातियाँ: नागा, गोंड, संथाल, भील, गुर्जर, टोडा, चकमा, भोटिया।

2. **अमेरिका**:

- जनजाति: रेड इंडियन।

3. **स्टेपी क्षेत्र**:

- जनजाति: खिरगीज।

4. **सवाना क्षेत्र**:

- जनजाति: मसाई।

शीत मरुस्थल और टुंड्रा क्षेत्र:

1. **ग्रीनलैंड और उत्तरी कनाडा**:

- जनजाति: एस्किमो।

2. **उत्तरी यूरोप**:

- जनजाति: लैप्स।

3. **उत्तरी साइबेरिया**:

- जनजातियाँ: याकूत, यूकाघीर, चुकची, समोयद।

मुख्य जनजातियाँ और उनकी विशिष्टताएँ:

1. **पिग्मी**:

- निवास: भूमध्यरेखीय वन क्षेत्र।
- मुख्यक्षेत्र: इतुरी नदी।
- उपवर्ग: मबूती, त्वा, बिंगा, गसेशा।

2. सेमांग और सकाई

- **सेमांग**:
  - ✓ मलाया और दक्षिणी थाईलैंड के पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करते हैं।
- **सकाई**:
  - ✓ "सनोई" नाम से भी जाने जाते हैं।
  - ✓ मलाया के वन क्षेत्रों में निवास करते हैं।

3. बद्दू

- **निवास क्षेत्र:**
  - ✓ दक्षिण-पश्चिम एशिया, अरब प्रायद्वीप के उत्तर में।
- **मुख्य विशेषताएँ:**
  - ✓ घुमंतू और चलवासी पशुपालक।
  - ✓ प्रमुख व्यवसाय: ऊँट पालन।
  - ✓ बद्दू समाज पितृप्रधान है।
  - ✓ मुखिया "शेख" कहलाता है।
  - ✓ प्रमुख समूह: रूवाला बद्दू।
  - ✓ सामूहिक रूप से "अनाजा" कहा जाता है।

4. बुशमैन

- **निवास क्षेत्र:**
  - ✓ कालाहारी मरुस्थल।
- **मुख्य विशेषताएँ:**
  - ✓ "सान" के नाम से भी जाने जाते हैं।
  - ✓ चमड़े के बने वस्त्र "क्लोक" या "करास" पहनते हैं।

5. मसाई

- **निवास क्षेत्र:**
  - ✓ मसाई सवाना घास के मैदान।
  - ✓ मुख्यत: भूमध्य रेखीय क्षेत्र, लेकिन अधिक ऊँचाई पर उपोष्ण जलवायु।
- **मुख्य विशेषताएँ:**
  - ✓ प्रमुख व्यवसाय: पशुपालन।
  - ✓ झोपड़ी को "काल" कहा जाता है।
  - ✓ किनिया में मसाई के दो प्रमुख वर्ग:
    1. काला बैल गौत्र।
    2. लाल बैल गौत्र।
  - ✓ बहुविवाही समाज।
  - ✓ धार्मिक नेता "लैबोन" कहलाता है।
  - ✓ आयु वर्ग के अनुसार योद्धाओं का वर्गीकरण।
  - ✓ उदाहरण: सफेद तलवार, लुटेश।

6. खिरगीज

- **निवास क्षेत्र:**
  - ✓ मध्य एशिया के ऊँचे पठारी क्षेत्र।
  - ✓ प्रमुख स्थान: किर्गिस्तान।
- **मुख्य विशेषताएँ:**
  - ✓ मंगोलायड प्रजाति।
  - ✓ मुख्य व्यवसाय: पशुपालन।
  - ✓ मौसमी प्रवास करते हैं।
  - ✓ इस्लाम धर्म के अनुयायी।

7. एस्किमो

- **निवास क्षेत्र:**
  - ✓ उत्तरी कनाडा, ग्रीनलैंड।
  - ✓ अन्य क्षेत्रों में नाम: स्कैंडिनेविया: लेप्स, सामी।
  - ✓ साइबेरिया: समोयड, याकूत, यूकाघीर, चुकची।

➢ **मुख्य विशेषताएँ:**

- ✓ सभी ध्रुवीय जनजातियाँ मंगोलायड प्रजाति से हैं।
- ✓ शिकार के लिए "माऊपाक" तकनीक (बर्फ को खोदकर छेद बनाना और हारपून से शिकार)।
- ✓ चमड़े के तंबू: "स्यूपिक्स"।
- ✓ बर्फ के घर: "इगलू"।
- ✓ यातायात: स्लेज गाड़ियाँ।
- ✓ छोटी नाव: "कयाक" (शिकार के लिए)।
- ✓ बड़ी नाव: "उमियाक" (समुद्री जानवरों के शिकार के लिए)।

जनजातियों के निवास क्षेत्र:

1. **पिग्मी का निवास क्षेत्र**

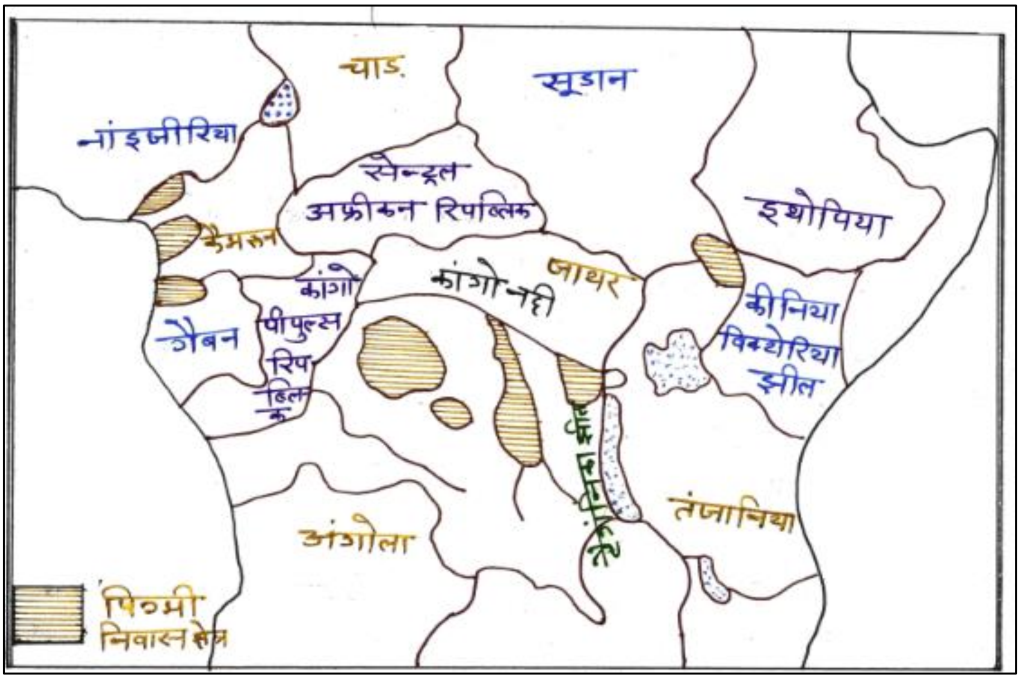

2. **सेमांग और सकाई का निवास क्षेत्र:**

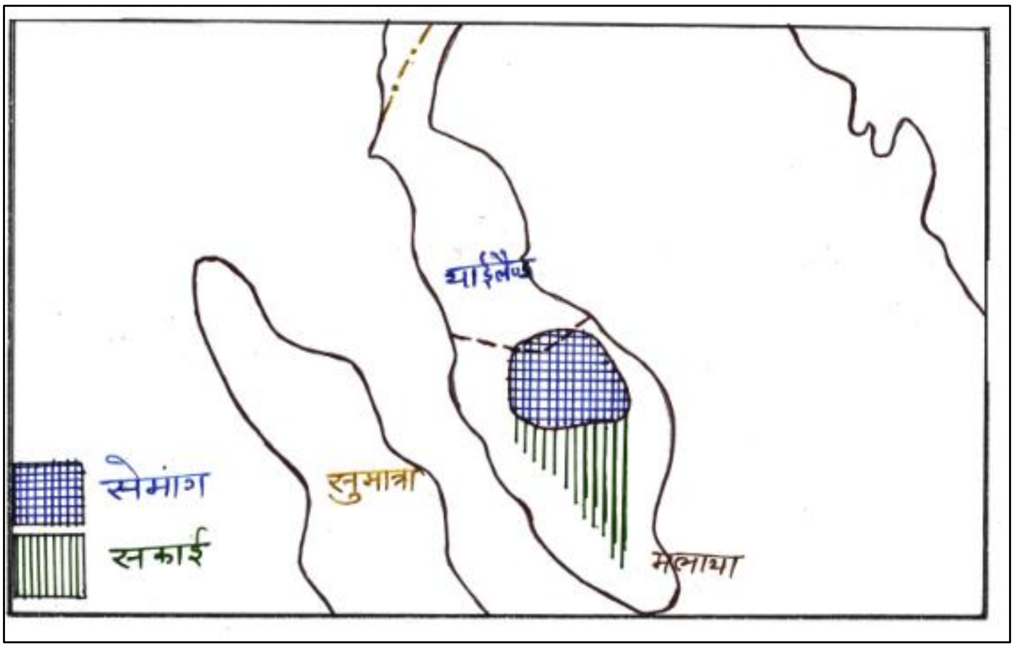

3. **बद्दू का निवास क्षेत्र:**

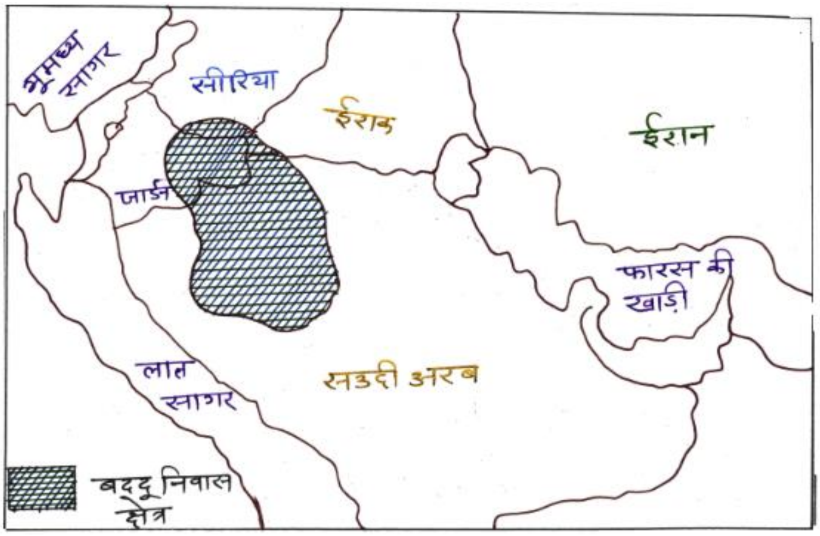

4. **मसाई का निवास क्षेत्र:**

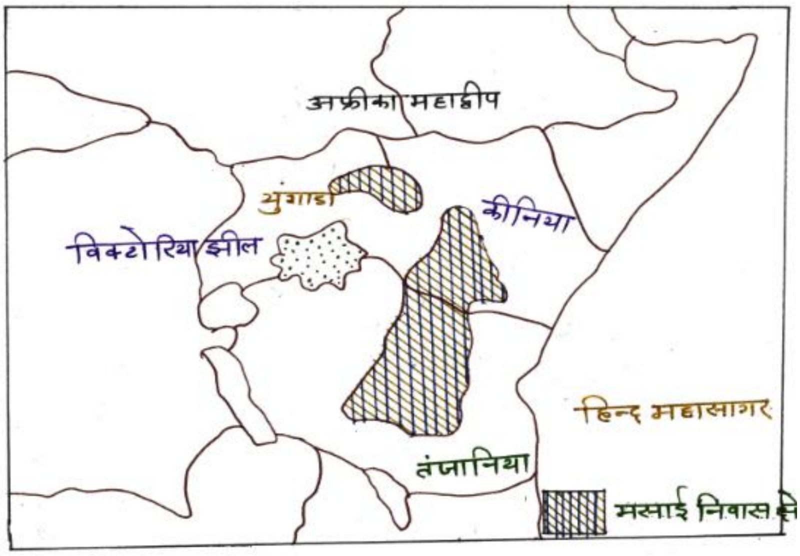

5. **खिरगीज का निवास क्षेत्र:**

6. **एस्किमो का निवास क्षेत्र:**

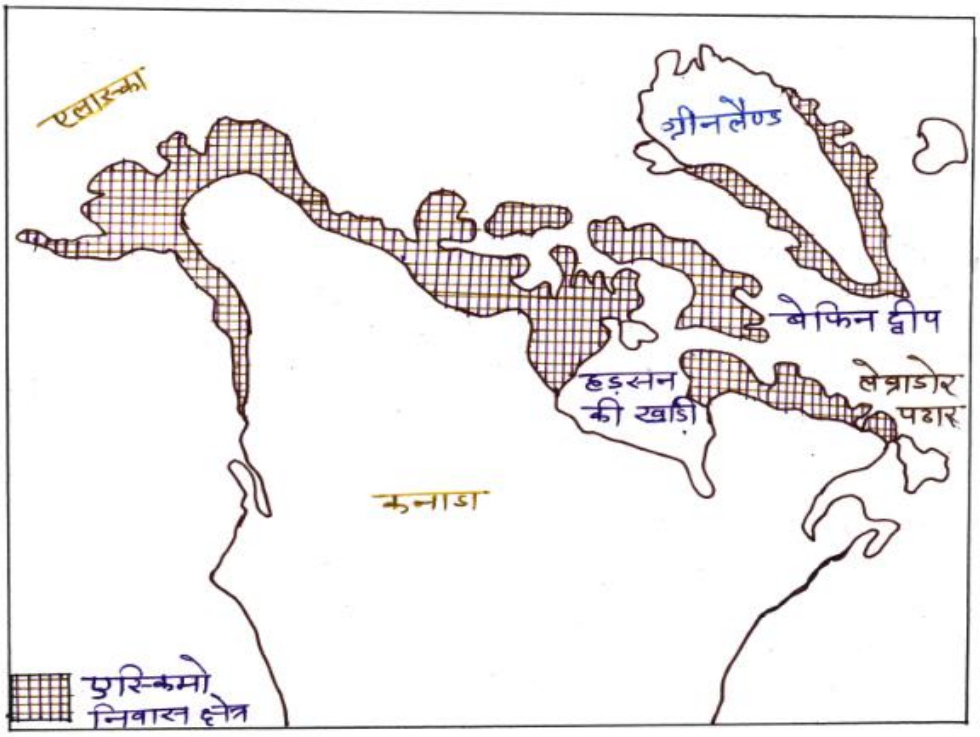

7. **बुशमैन निवास क्षेत्र:**

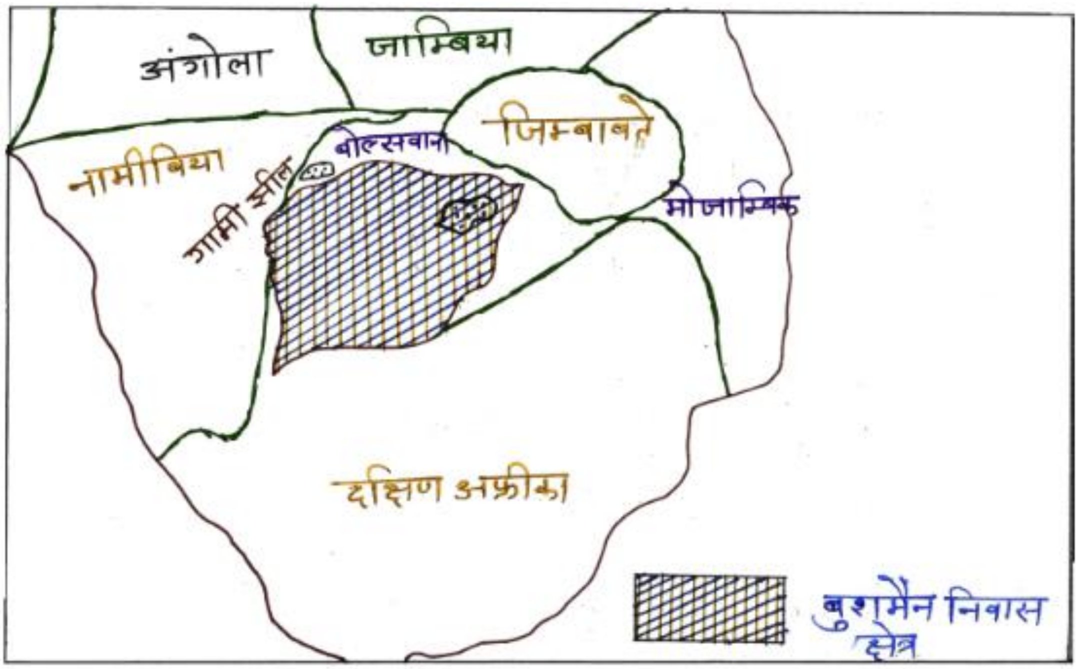

3 CHAPTER भारत की जनजातियाँ

भारत की जनजातियाँ

द्रविड़ जनजाति

- **विशेषताएँ:**
  - ✓ द्रविड़ को भारत की मूल प्रजाति माना जाता है।
  - ✓ यह **नीग्रिटो प्रजाति** से संबंधित है।
  - ✓ इसके शुद्ध वंशज अंडमान द्वीप समूह में देखे जाते हैं।

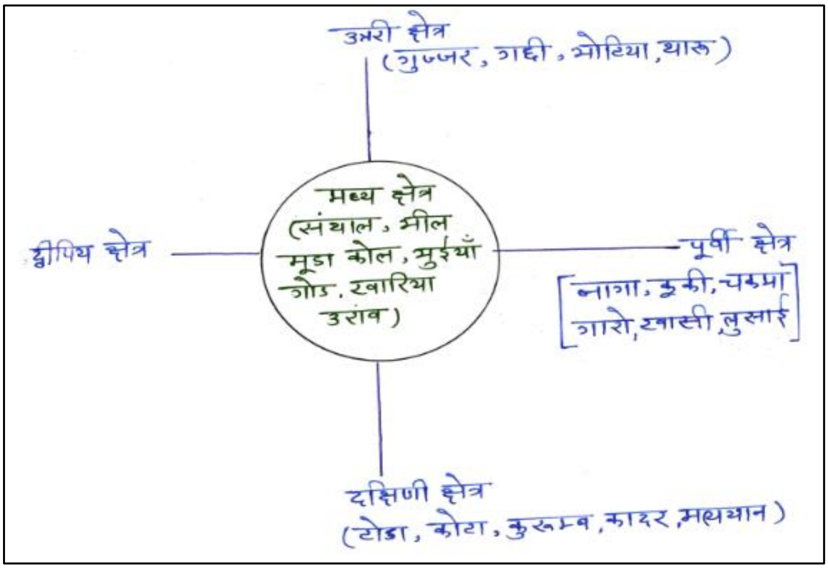

- **स्थिति:**
  - ✓ भारत की **जनजातियाँ सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत पिछड़ी हुई हैं।**
  - ✓ **ये जनजातियाँ पठारी**, पहाड़ी, वनों, मरूस्थलों, और द्वीपीय समूहों में निवास करती हैं।
- **क्षेत्रीय वर्गीकरण:**
  - ✓ भारतीय जनजातियों को क्षेत्रीय आधार पर पाँच प्रदेशों में विभाजित किया गया है।

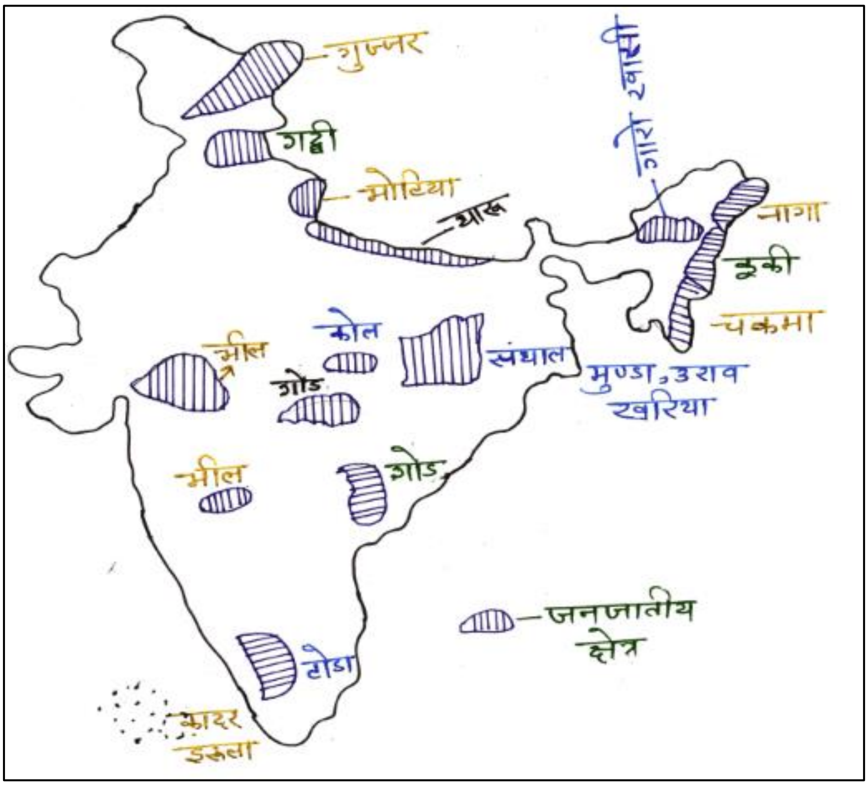

नागा जनजाति

- **निवास क्षेत्र:**
  - ✓ नागालैंड (पूर्वी पहाड़ियाँ)।
  - ✓ नागालैंड के अतिरिक्त मणिपुर, मिजोरम, असम, और अरुणाचल प्रदेश में भी निवास।
- **उपजातियाँ:**
  - ✓ अगामी, सेमा, रेगमा, ल्होया, आओ, कोन्यक, फोम, चाग, कचा, काबुई, तेखुल।
- **कृषि:**
  - ✓ स्थानांतरणशील कृषि करते हैं।
  - ✓ कुछ मैदानी क्षेत्रों में स्थायी कृषि भी होती है।
- **सामाजिक विशेषताएँ:**
  - ✓ नागाओं के गाँवों में एक बड़ा शयनागार (मोरंग) बनाया जाता है, जिसमें अविवाहित युवक विश्राम करते हैं। इसमें युवतियों का प्रवेश निषिद्ध होता है।
  - ✓ विधवा विवाह प्रथा पाई जाती है।
  - ✓ नागाओं में तिरहुच (एक खेल) बहुत प्रसिद्ध है।
  - ✓ नागाओं का जीवन युद्धमय होता है, और सिर काटने की पुरानी प्रथा प्रसिद्ध है।

थारू जनजाति

- **निवास क्षेत्र:**

उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र।

- **विशेषताएँ:**
  - ✓ थारू एक मिश्रित जाति है, जिसमें मंगोलॉयड और द्रविड़ (नीग्रिटो) के लक्षण मिलते हैं।
  - ✓ स्थायी कृषि करते हैं, मुख्यतः चावल की खेती।
- **सामाजिक जीवन:**
  - ✓ भोजन में नियमितता:
    - सुबह: **कलेवा**।
    - दोपहर: **मिगी**।
    - रात: **बेरी**।
  - ✓ एकल विवाह प्रथा प्रचलित है।
  - ✓ पुरुष प्रधान समाज।
  - ✓ धार्मिकता:
    - कालिका (दुर्गा) और भैरव (शिव) प्रमुख आराध्य देव।
    - हिंदू, मुस्लिम, सिख देवताओं की पूजा।
    - पीपल को पवित्र वृक्ष मानते हैं।
    - गाय, बंदर, नाग पवित्र माने जाते हैं।

गोंड जनजाति (Gond)

- **निवास क्षेत्र:**
  - ✓ मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पठारी और जंगली भाग।
- **उपजातियाँ:**
  - ✓ राजगोंड (सर्वाधिक प्रमुख), रेघुवाल, दद्वे, कोलाम।
- **कृषि:**
  - ✓ स्थानांतरणशील कृषि (जिसे मध्य प्रदेश में दिप्पा कहा जाता है)।
  - ✓ कहीं-कहीं सीढ़ीदार खेती।
  - ✓ "घुर गोंड" भूमि-स्वामी होते हैं।
- **सामाजिक जीवन:**
  - ✓ एकल विवाह प्रथा।
  - ✓ धनी गोंड बहुविवाह करते हैं।
  - ✓ विधवा विवाह प्रथा प्रचलित।
  - ✓ युवकों और युवतियों के लिए अलग झोपड़ियाँ (घोटाल) बनाई जाती हैं। विवाह पूर्व मिलने की अनुमति।
  - ✓ मृत्यु के बाद दफनाने की प्रथा।

संथाल (Santhal)

- **निवास क्षेत्र:**
  - ✓ छोटा नागपुर पठार।
- **विशेषताएँ:**
  - ✓ समान गोत्र में विवाह नहीं करते।
  - ✓ विवाह में बिचौलिये को **रैबर** कहा जाता है।
  - ✓ गाँव का **माझीथान** (देवस्थान) पेड़ के नीचे स्थापित होता है।
  - ✓ **गाय** को पूज्य मानते हैं और **सोयाराम** नामक त्योहार पर इसकी पूजा करते हैं।
  - ✓ हिंदुओं की भांति मृतकों को जलाते हैं।

भील (Bhil)

- **निवास क्षेत्र:**
  - ✓ पश्चिमी भारत: विंध्याचल, अरावली, सतपुड़ा के पर्वतीय भाग।
- **विशेषताएँ:**
  - ✓ संथाल और गोंड के बाद भील भारत का तीसरा सबसे बड़ा जनजातीय समूह है।
  - ✓ वस्त्र के आधार पर दो वर्ग:

लगोटिया भील	**पोतीछा भील**
वे भील जो लंगोटी पहनते है व शेष शरीर नंगा रहता है स्त्रियाँ लहंगा पहनती है	वे भील जो धोती कुर्ता या कमीज पहनते है एवं स्त्रियाँ घाघरा व ब्लाऊज पहनती है।

  - ✓ हनुमान जी को अधिक पूजते हैं।

टोडा (Toda)

- **निवास क्षेत्र:**
  - ✓ तमिलनाडु के नीलगिरी क्षेत्र।
- **विशेषताएँ:**
  - ✓ केवल **भैंस** पालते हैं; भैंसों की संख्या आर्थिक स्थिति का मापदंड है।
  - ✓ बहुपति और बहुपत्नी विवाह प्रचलित।
  - ✓ प्रत्येक गाँव में एक **दुग्ध मंदिर** होता है, जहाँ दूध, घी, मक्खन रखा जाता है।
  - ✓ दुग्ध मंदिर की देखभाल के लिए एक पुजारी होता है, जिसे **पलोक** या **दुग्ध पुजारी** कहा जाता है।

गद्दी (Gaddi)

- **निवास क्षेत्र:**
  - ✓ हिमाचल प्रदेश।
- **विशेषताएँ:**
  - ✓ मौसमी प्रवास वाली जनजाति।
  - ✓ जंगली पौधों की जड़ों और जौ को सड़ाकर मंदिर बनाते हैं, जिसे स्थानीय भाषा में **लुकरी** कहते हैं।
  - ✓ बकरी के बालों से धागा बनाकर वस्त्र तैयार करते हैं, जिसे **थोबी** कहते हैं।
  - ✓ विधवा विवाह और बहुपत्नी प्रथा पाई जाती है।

भोटिया (Bhotia)

- **निवास क्षेत्र:**
  - ✓ उत्तराखंड; निवास स्थान को **भोट प्रदेश** कहा जाता है।
- **विशेषताएँ:**
  - ✓ मौसमी प्रवास इनकी जीवनशैली का महत्वपूर्ण हिस्सा है।
  - ✓ **शीतकालीन आवास: गुनसा**।
  - ✓ **ग्रीष्मकालीन आवास: मैत**।
  - ✓ गाँव में एक चौपाल का निर्माण करते हैं, जिसे **रागवास कुड़ी** के नाम से जाना जाता है।